SAMARTH BAL MANDIR HIGH SCHOOL

Subject – Hindi

Class – 8th

Lesson – 3

प्र01. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. राजा प्रसेनजित क्यों चिंतित थे ?

उ0 राजा प्रसेनजित डाकू अँगुलिमाल के अत्याचारों से चिंतित थे।

2. महात्मा बुद्ध ने डाकू को कैसे पहचाना ?

उ0 महात्मा बुद्ध ने डाकू को उसके भयंकर रूप से पहचाना।

3. 'ठहर जा' किसने – किससे कहा था ?

उ0 'ठहर जा' डाकू अँगुलिमाल ने महात्मा बुद्ध से कहा था।

4. महात्मा बुद्ध के चेहरे पर सदैव मुस्कान क्यों रहती थी ?

उ0 महात्मा बुद्ध के चेहरे पर सदैव मुस्कान अपने ज्ञान के कारण रहती थी।

प्र02. लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. डाकू का नाम अँगुलिमाल क्यों पड़ा ?

उ0 अँगुलिमाल ने हजार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु वह कितने आदमियों को मार चुका, इसका हिसाब रखना कठिन था। इसके लिए उसने एक उपाय सोचा। वह जब भी किसी व्यक्ति का वध करता, तो वह उसकी एक अँगुली काट लेता। और वह उन अँगुलियों की माला बनाकर अपने गले मे डाले रहता था। इसलिए उसका नाम 'अँगुलिमाल' पड़ गया था।

2. पहरेदार के रोकने पर भी महात्मा बुद्ध जंगल में क्यो प्रवेश कर गए ?

उ0 उनका हृदय संसार के कष्टों को देखकर दुखी था। व उन्हे आत्मज्ञान होने के कारण न तो कोई चिंता थी और न ही कोई डर। इसलिए पहरेदार के रोकने पर भी महात्मा बुद्ध जंगल में प्रवेश कर गए।

3. महात्मा बुद्ध जंगल में जाते समय क्या विचार कर रहे थे ?

उ0 महात्मा बुद्ध जंगल में जाते समय विचार कर रहे थे कि आदमी आदमी को क्यों मारता है ? जीव, जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नही होता।

4. अँगुलिमाल का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ ?

उ0 महात्मा बुद्ध ने अँगुलिमाल को शान्ति, दया और प्रेम का आदेश दिया। इससे उसकी आँखे खुल गई। उसने अँगुलियों की माला तोड़ दी व कटार फेंक दी। इस तरह उसका हृदय परिवर्तन हुआ और वह महात्मा बुद्ध का शिष्य बन गया।

प्र03. शब्दो का वाक्यों में प्रयोग

1. धीरज – हमें मुसीबत के समय धीरज से कार्य करना चाहिए।
2. सावधान – हमें सदैव सावधान रहना चाहिए।
3. चीख–पुकार – दुर्घटना के समय चीख–पुकार होती है।
4. चिंता – हमें व्यर्थ चिंता नही करना चाहिए।
5. दृष्टि – हमें दूसरों के प्रति दयादृष्टि रखना चाहिए।
6. प्रेमपूर्वक – प्रेमपूर्वक रहनें मे ही आनंद है।

परीक्षा में उपयोगी प्रश्न

1. राजा प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध से क्या कहा ?

उ0 राजा प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध से कहा– ''भगवान, अँगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा त्रस्त है। इससे मैं बहुत चिंतित हूँ।''

2. भगवान बुद्ध के उपदेश का अँगुलिमाल पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ0 भगवान बुद्ध के उपदेश का अँगुलिमाल पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। वह हिंसा को त्यागकर उनका शिष्य बन गया।

3. अँगुलिमाल कौन था ?

उ0 अँगुलिमाल बहुत बड़ा भयंकर डाकू था। उसने हजार आदमियो की हत्या करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। इसकी गिनती के लिए वह जब भी किसी का वध करता, उसकी अगुँली काटकर उसकी माला बनाकर अपने गले में डाल लेता था। इससे वह अँगुलिमाल कहा जाने लगा था।

4. अँगुलिमाल महात्मा बुद्ध को देखकर हैरान क्यों हो गया ?

उ0 अँगुलिमाल महात्मा बुद्ध को देखकर हैरान हो गया। क्योंकि उसके सामने जो कोई भी आया, वह उससे डर गया, किन्तु बुद्ध उससे डरकर नही, बल्कि मुस्कुराकर बातें कर रहा है।

पाठ – 4

प्र01. अति लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. पुलिस से क्यों नही डरना चाहिए ?

उ0 पुलिस हमारी सुरक्षा के लिए है। इसलिए हमें पुलिस से नही डरना चाहिए।

2. पुलिस पूछताछ क्यों करती है ?

उ0 जब कोई अपराध – या घटना हो जाती है, तब पुलिस लोगो से पूछताछ करती है।

3. पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी कौन– कौन से है ?

उ0 जिला पुलिस अधीक्षक, डी0 आई0 जी, रेंज एवं राज्य के पुलिस महानिदेशक पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी हैं।

4. हम पुलिस का सहयोग किस प्रकार कर सकते है ?

उ0 कानून व्यवस्था को बनाए रखने, सूचना का आदान – प्रदान कर, कानून व संविधान में आस्था बनाए रखकर हम पुलिस का सहयोग कर सकते हैं।

प्र02. लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पुलिस किस – किस स्थिति में हथकड़ी लगा सकती है ?

उ0 अपराधी के भाग जाने की स्थिति में, व खतरनाक आरोपी होने पर न्यायालय की अनुमति मिलने पर पुलिस उसे हथकड़ी लगा सकती है।

2. पुलिस को सहयोग करना क्यों आवश्यक है ?

उ0 पुलिस असामाजिक और आपराधिक तत्वों के विरूद्ध कार्यवाही करके अपराध को रोकती है। इसके लिए वह हमारा सहयोग चाहती है। इसलिए पुलिस को सहयोग करना आवश्यक है।

3. महिलाओ से पूछताछ के लिए क्या–क्या सावधानियाँ जरूरी है ?

उ0 महिलाओं से पूछताछ के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ जरूरी हैं–

1. पुलिस हिरासत में उनके साथ कोई दुर्व्यवहार न हो।
2. कोई अपमानजनक बात न हो।
3. उनके साथ कोई भी अपराध या घटना घटित होने पर थाने में उससे संबंधित रिर्पोट होने पर उसे कानूनी सहायता व संरक्षण प्रदान हो।
4. नागरिकों के पुलिस के प्रति क्या–क्या कर्तव्य है ?

उ0 प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, कि वह सामाजिक शांति, साम्प्रदायिक सद्भावना, को प्रभावित करने वाली सूचना, राष्ट्रीय व सामाजिक सम्पत्ति, राष्ट्रीय ध्वज को सुरक्षा व सम्मान करना व दुर्घटनाग्रस्त लोगो को निकट के अस्पताल पहुँचाकर पुलिस को सूचना दें।

प्र01 अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. सरदार पटेल का स्वभाव कैसा था ?

उ0 सरदार पटेल का स्वभाव अत्यधिक वीर निर्भयी, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी और लगनशील था।

2. सहायकों तथा अनुयायियों द्वारा भूल करने पर सरदार पटेल क्या करते थे ?

उ0 अपने सहायकों तथा अनुयायियों द्वारा भूल करने पर सरदार पटेल उन पर कृपा करते थे। वे उनकी देखभाल और चिंता पिता के समान करते थे।

3. सरदार पटेल ने गृहमंत्री के रूप में कौन–सा महत्वपूर्ण कार्य किया ?

उ0 सरदार पटेल ने गृहमंत्री के रूप में देशी रियासतो के एकीकरण का महत्वपूर्ण कार्य किया।

4. सरदार पटेल की प्रबल आकंक्षा क्या थी ?

उ0 सरदार पटेल की प्रबल आकंक्षा थी कि भारत अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने में सुयोग्य व सबल बन जाए।

5. पटेल को सरदार की उपाधि कैसे मिली ?

उ0 स्वतंत्रता–संग्राम के समय में दिए गए उनके महत्वपूर्ण योगदानों के कारण पटेल को सरदार की उपाधि मिली।

प्र02 लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. सरदार पटेल को लौहपुरूष क्यों कहा जाता है ?

उ0 सरदार पटेल का आकर्षक व्यक्तित्व, अद्भुत प्रतिभा, तीव्र बुद्धि व प्रशासनिक क्षमता प्रशंसनीय थी। वे कठिन परिस्थितियों में भी सफलता को प्राप्त कर लेते थे। वे वीर, निर्भयी, दृढ़ निश्चयी, मेहनती और उत्साही थे। इन्हीं विशेषताओं के कारण सरदार पटेल को लौह पुरूष कहा जाता है।

2. सरदार पटेल का अपने अनुयायियों के साथ व्यवहार कैसा था ?

उ0 सरदार पटेल का व्यवहार अपने अनुयायियों के प्रति बड़ा ही सरस व उदार था। वे उनके द्वारा कोई गलत कदम उठाने पर उन्हे माफ करके समझाते थे। वे उनकी देखभाल व चिंता एक पिता की तरह ही करते थे।

3. सरदार पटेल किस गुण के कारण अपने विरोधियों को पछाड़ दिया करते थे ?

उ0 सरदार पटेल की यह बहुत बड़ी विशेषता थी कि वे अपने विरोधी व्यक्तियो अथवा अन्य राजनीतिक दलों की कमजोरियो को अच्छी तरह से जानते थे। वे उन कमजोरियों को अच्छी तरह से अपने दिलों–दिमाग में बैठा लेते थे। फिर उसके द्वारा वे अपनें विरोधियां को पछाड़ दिया करते थे।

4. सरदार पटेल हठी विरोधियों को कैसे विनयानुशासन में लाते थे ?

उ0 सरदार पटेल ने कभी भी शक्तिशाली बनने की बात कभी नहीं सोची। वे तो शक्ति को हथियाकर उसका नियंत्रण करके उसका संचालन करते थे। अपने हाथ में लिया हुआ कार्य जब तक पूरा नही कर लेते तब तक वे अपने आपको छिपाए रखते थे। इस प्रकार के युद्ध कौशल दिखाते हुए अपने हठी विद्रोहियों की कमजोरियों पर अंतिम चोट कर उन्हें विनयानुशासन में लाते थें।

<u>अन्य प्रश्न</u>–

1. सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. सरदार पटेल का हृदय कैसा था ?
3. सरदार पटेल का ध्यान हर समय किस पर लगा रहता था ?

पाठ – 6

प्र01. अतिलघुउत्तरीय प्रश्न–

1. ग्वालिन का नाम क्या था ?

उ0 ग्वालिन का नाम हीरा था।

2. दूध दुहने के समय कुणी गाय रह–रहकर किसे पुकारती थी ?

उ0 दूध दुहने के समय कुणी गाय रह–रहकर अपनी बछिया को पुकारती थी।

3. हीरा किले से वापिस कब लौट आती थी ?

उ0 हीरा किले से वापिस रात होने से पहले ही लौट आती थी।

4. राजा ने हीरा को जागीर में क्या दिया ?

उ0 राजा ने हीरा को जागीर में एक गाँव दे दिया।

प्र02. लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. दूध दुहते समय हीरा बछिया के साथ कैसा व्यवहार करती थी ?

उ0 दूध दुहते समय हीरा बछिया के साथ बड़ा ही कठोर व्यवहार करती थी। बछिया दौड़कर दूध पीने के लिए आती तो हीरा उसे लौटा देती। फलस्वरूप वह अपनी माँ का दूध पीने के लिए तरसती और बिलखती रहती थी। लेकिन हीरा उधर कभी भी ध्यान नही देती।

2. किले का फाटक बंद होने पर हीरा पहरेदार से क्या बोली ?

उ0 किले का फाटक बंद होने पर हीरा पहरेदार से बोली – ''द्वार खोलो! मेरा मुन्ना भूखा है, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। फाटक खोल दो। अरे भाई, एक बार द्वार खोल दो।''

3. राजा का मन क्यों पिघला ?

उ0. राजा ने हीरा से यह सारी कहानी सुनी कि किस प्रकार वह स्वंय के जीवन को संकट में डालकर, अपने बच्चों के पास पहुँची थी। इस कारण राजा का मन पिघल गया।

<u>अन्य प्रश्नः–</u>

1. गाय का नाम क्या था ?
2. राजा दूध पीकर क्या करता था ?
3. हीरा अपने घर किस तरह पहुँची ?

प्र06. निम्नलिखित क्रियाओं के पूर्वकालिक क्रिया रूप बनाइए।

पढ़ना	पढ़कर	लिखना	लिखकर
हँसना	हँसकर	देखना	देखकर
जागना	जागकर, जगाकर	पीना	पीकर
लाना	लाकर		

पाठ – 7

प्र01. अति लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. कुदरत हमें क्या सिखाती है ?

उ0 कुदरत हमें परोपकार करना सिखाती है।

2. तारे हमें क्या देते है ?

उ0 तारे हमें शीतलता देते हैं।

3. धरती क्या कार्य करती है ?

उ0 धरती सबका पालन–पोषण करती है।

प्र02. लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. पर्वतों को सोतो का जनक क्यों कहा है ?

उ0 पर्वतों से बड़ी–बड़ी नदियाँ, छोटे–बड़े झरने व कई प्रकार के छोटे – बड़े नाले निकलते है। इन, नदियों, झरनों, नालों में दिन रात स्वच्छ जल बहता रहता है, पर्वतों से नदियों, झरनों व नालो के निकलने के कारण पर्वतों को इनका जनक कहा गया है।

2. पेड़ों को दधीचि क्यों माना गया है ?

उ0 पेड़ हर युग में सदैव परोपकार के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने से कभी पीछे नही हटते, चाहे कितनी भी कठिन परिस्थिति क्यों न हो। इनका त्याग–बलिदान महर्षि दधीचि के समान है। इसलिए उन्हें (पेड़ो को) महर्षि दधीचि माना गया है।

3. जुगनु से हमें क्या सीख मिलती है ?

उ0 जुगनु आकार में छोटा होते हुए भी हमें थोड़ी–थोड़ी करके रोशनी देने से कभी पीछे नहीं हटता, वह अंधकार को दूर करके हमें प्रकाश देने में लगा रहता है। फलस्वरूप जुगनु से हमें यह सीख मिलती है। कि परोपकार करने के लिए छोटे–बड़े का महत्व नहीं होता, हमें जितना भी हो सके परोपकार करते रहना चाहिए।

<u>अन्य प्रश्न</u>

1. सूरज हमें क्या देता है ?
2. दधीचि किसे कहा गया है ?
3. धरती को किस रूप में चित्रित किया गया है ?
4. प्रकृति के कौन–कौन से रूप क्या–क्या परोपकार करते है ?
5. इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

प्र05. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी शब्द लिखिए–

अग्रज –	अनुज	सुगंध –	दुर्गंध
आदि –	अंत	आदान –	प्रदान

पाठ – 8

प्र01. अतिलघुउत्तरीय प्रश्न–

1. डॉ0 शर्मा लोगों से किस प्रकार मिलते थे?

उ0 डॉ0 शर्मा लोगों से अपने परिवार के सदस्यों की तरह मिलते थे।

2. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा ने भारत के किस गरिमामय सर्वेच्च पद को सुशोभित किया था।

उ0 डॉ0 शंकर दयाल शर्मा ने भारत के राष्ट्रपति गारिमामय पद को सुशोभित किया।

3. अटल जी ने किन–किन पत्रो का संपादन किया?

उ0 अटल जी ने 'राष्ट्रधर्म', 'स्वदेश', पांचजन्य और 'वीर अर्जुन' का संपादन किया।

4. अटलबिहारी वाजपेयी प्रथम बार प्रधानमंत्री कब बने?

उ0 अटल बिहरी वाजपेयी प्रथम बार 1996 में प्रधानमंत्री बने।

प्र02. लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा की शिक्षा के बारे में लिखिए?

उत्तर डॉ0 शंकर दयाल शर्मा बचपन से ही एक मेधावी छात्र रहे। उन्होने अपनी शैक्षिक यात्रा में हिन्दी अँग्रेजी, संस्कृत साहित्य में प्रथम श्रेणी से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। लखनऊ विश्वविद्यालय से एल0 एल0 एम तथा कानून में पी0 एच0 डी कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पूर्ण की।

2. डॉ0 शर्मा ने किन–किन पुस्तकों की रचना की?

उत्तर डॉ0 शर्मा ने 'प्रतिष्ठित भारतीय', हमारे चिंतन की मूलधारा' और 'देश – मणि' पुस्तको की रचना की।

3. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा जन सामान्य से कब मिलते थे?

उ0 डॉ0 शंकर दयाल शर्मा जन सामान्य से प्रातः 9 बजे से 1:30 बजे तक प्रतिदिन मिलते थे।

4. अटल जी की काव्य सृजन में रूचि कैसे जागृत हुई?

उ0 अटल जी के पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी अध्यापक एवं कवि थे। उनकी रचनाएँ पढ़ते–पढ़ते अटल जी तुकबन्दी करने लगे। उन दिनों धनाक्षरी और सवैया छंद विशेष पंसद किए जाते थे। अटल ने ब्रजभाषा में रचनाएँ की।

5. अटल जी की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

उ0 ''मेरी इक्यावन कविताएँ'', ''कैदी कविराय की कुंडलियाँ'', ''न दैन्यं न पलायनम्'', ''मेरी संसद यात्रा'' आदि अटल जी की प्रमुख रचनाएँ हैं।

विविध प्रश्नावली

प्र03 अति लघुउत्तरीय प्रश्न–

1 अटलबिहारी वाजपेयी ने भारत के किस गरिमामय पद को सुशोभित किया ?

उ0 अटलबिहारी वाजपेयी ने भारत के प्रधानमंत्री गरिमामय पद को सुशोभित किया।

2. वृक्ष हमे क्या देते हैं ?

उ0 वृक्ष हमें फूल, फल और बीज देते हैं।

3. कुणी किसका नाम था ?

उ0 कुणी गाय का नाम था।

4. सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति के प्रति आपका क्या कर्तव्य है ?

उ0 सड़क दुघर्टना में घायल व्यक्ति के प्रति हमारा यह कर्तव्य है कि हम उसे निकट के चिकित्सालय में पहुँचाए और पुलिस को सूचना दें।

5. महात्मा बुद्ध जंगल की ओर क्यों जा रहे थें ?

उ0 महात्मा बुद्ध जंगल की ओर इसलिए जा रहे थे क्योकि उसमें अंगुलिमाल रहता था।

6. विनम्र व्यक्ति की क्या पहचाना है ?

उ0 अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करना विनम्र व्यक्ति की पहचान है।

7. सरदार पटेल का स्वभाव कैसा था ?

उ0 सरदार पटेल का स्वभाव अत्यधिक वीर, निर्भयी, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी व लगनशील था।

8. 'एक वेश' से कवि उदयशंकर भट्ट का क्या आशय है ?

उ0 'एक वेश' से कवि उदयशंकर भट्ट का आशय 'राष्ट्रीय एकता' से है।

प्र04. लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. 'जिएँ देश के लिए जिएँ हम' पंक्ति से कवि का क्या आशय है ?

उ0 'जिएँ देश के लिए जिएँ हम' पंक्ति से कवि का आशय है कि अपने देश को महान बनाने के लिए हमें अपना तन, मन सब कुछ जरूरत पड़ने पर न्यौछावर कर देना चाहिए।

2. विनम्र व्यक्ति का व्यवसाय हमेशा क्यों फलता–फूलता है ?

उ0 विनम्र व्यक्ति का व्यवसाय हमेशा फलता–फूलता है। क्योंकि वह हर समस्या का समाधान धैर्य के साथ

करके सफलता की ऊँचाईयों पर चढ़ता जाता है।

3. महात्मा बुद्ध के मन में जंगल में जाते समय क्या विचार आ रहे थे?

उ0 महात्मा बुद्ध के मन में जंगल में जाते समय विचार आ रहे थे कि 'आदमी आदमी को मारता क्यों है? जीव, जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नहीं होता?

4. हम पुलिस को किस प्रकार सहयोग कर सकते है?

उ0 हम पुलिस को कानून व्यवस्था बनाए रखने में, सूचना का आदान करने में, कानून एवं नियमों का स्वेच्छा से आस्था बनाए रखनें में सहयोग कर सकते हैं।

5. सरदार पटेल को 'लौह पुरूष' क्यो कहा जाता है?

उ0 सरदार पटेल को 'लौह पुरूष' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे स्वभाव से अत्यधिक वीर, निर्भयी, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी तथा लगनशील थे।

6. हीरा अपने बच्चे से मिलने के लिए क्यों छटपटा रही थी?

उ0 हीरा अपने बच्चे से मिलने के लिए इसलिए छटपटा रही थी क्योंकि वह अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए व्याकुल हो रही थी और वह इस वेदना को और अधिक सहन नहीं कर पा रही थी।

7. 'दधीचि' ऋषि कौन थे?

उ0 'दधीचि' ऋषि ने अस्त्र बनाने के लिए अपनी हड्डियाँ तक देवताओं को दान कर दी थी। इन हड्डियाँ से वज्र बनाया गया। फिर उससे इंद्र ने राक्षसों को परास्त किया।

8. मध्यप्रदेश ने कौन–कौन से शीर्ष पुरूष राष्ट्र को दिए?

उ0 मध्यप्रदेश ने डॉ0 शंकर दयाल शर्मा और श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे शीर्ष पुरूष राष्ट्र को दिए है।

प्र07. विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	विलोम शब्द
औपचारिक	अनौपचारिक
शांति	अशांति
दिन	रात
कृतज्ञ	कृतघ्न

(ब) निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग कीजिए–

शब्द	उपसर्ग
अभिरुचि	अभि
अपमान	अप
अनाचार	अन
प्रतिकार	प्रति

(स) तत्सम्, तद्भव, विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए–

तत्सम शब्द – दुग्ध, पृष्ठभूमि

तद्भव शब्द – कान, घर

विदेशी शब्द – रिकार्ड, टिकिट

(द) संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम छाँटकर लिखिए–

संज्ञा – राजा, फूल

विशेषण – लाल, कोमल

सर्वनाम – तुम्हारा, हमारा

निबन्ध

विज्ञान और आधुनिक जीवन

या

विज्ञान के चमत्कार

या

विज्ञान के लाभ या हनियाँ

प्रस्तावनाः– आज का युग विज्ञान का युग है। जिज्ञासा विज्ञान की जननी है। प्रयोग एवं तथ्य पर आधारित क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहते है। मानव की आवश्यकताओं ने विज्ञान में असंख्य खोजे की। और इन खोजों ने संसार की काया पलट दी। कम खर्च में ढेर सारी सुविधाएँ और भरपूर मनोरंजन विज्ञान की ही देन है।

विज्ञान का व्यापक प्रभावः– विज्ञान का प्रभाव व्यापक है। उसकी शाक्ति का विस्तार अकथनीय व अकल्पनीय है। विज्ञान ने आज असम्भव बातों को भी सम्भव बना दिया है। आज विज्ञान ने मानव जीवन की दशा ही परिवर्तित कर दी है।

चिकित्सा क्षेत्र मेंः– चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान का अपूर्व योगदान है। एक्सरे के द्वारा मानव के आन्तरिक चित्र लिए जा सकते हैं। विज्ञान द्वारा किए गए प्रयासो ने काल की छाती पर करारा घूँसा मारा है। कैंसर जैसी बीमारियों को भी विज्ञान चुनौती के रूप में स्वीकार कर रहा है। यद्यपि आज विज्ञान मौत पर विजय प्राप्त करने में सफल नही हुआ, लेकिन वैज्ञानिकों के इस दिशा में भी निरन्तर प्रयास जारी है।

अन्तरिक्ष व औद्योगिक क्षेत्र मेंः– अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी विज्ञान ने प्रवेश कर लिया है। आज मानव चन्द्रमा तक पहुँचने में सफल हुआ है। मंगल एवं शनि आदि ग्रहों की जानकारी भी बहुत हद तक प्राप्त कर चुका है। अभी मानव इस दिशा में और भी प्रयासरत है। औद्योगिक क्षेत्र में भी विज्ञान ने अभूतपर्व उपलब्धि प्राप्त की है। विज्ञान द्वारा आविष्कृत मशीनों एवं कल–पुर्जो के माध्यम से विभिन्न उद्योग संचालित किए जा रहे है। इनसे श्रम एवं शाक्ति की बचत हो रही है। राष्ट्र की आय में भी वृद्धि हुई है।

विज्ञान एक वरदान के रूप मेंः– विज्ञान मानव के लिए वरदान स्वरूप है। इसने उसे सुख व सुविधा के अनगिनत साधन जुटाए है। आज मानव तर्क की कसौटी पर कसकर किसी वस्तु के गुण एवं दोषो का विवेचन करता है। कठोर परिश्रम से आज मानव को मुक्ति मिली है। जीवन उन्नत एवं सुसंस्कृत हुआ है। यदि हमारे पूर्वज आज के मानव को निहारे तो वे आश्चर्य के सागर में डूब जाएँगें। विज्ञान ने मानव की जिज्ञासा–वृत्ति को शान्त किया है। व कल्पनाओं को साकार किया है।

विज्ञान एक अभिशाप के रूप मेंः– हर वस्तु के दो पहलू होते हैं। विज्ञान के कुछ नकारात्मक परिणाम भी

सामने आए हैं। विज्ञान द्वारा अविष्कृत अस्त्र–शस्त्र मानव के समक्ष मृत्यु रूप में उपस्थित है। विषैली गैसें वातावरण को दूषित बना रही है। विज्ञान से उपलब्ध सुख–साधनों से मानव आलसी तथा श्रम से जी चुराने वाला हो गया है। जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी नगर इसके साक्षी हैं। जहाँ की धरती बंजर हुई, मानव विकलांग बने। आज का मानव विज्ञान के साधनों की दुहाई देकर नास्तिकता की ओर उन्मुख है। नैतिकता समाप्त हो चुकी है। भौतिकता का विस्तार हो रहा हैं।

उपसंहार – विज्ञान स्वयं एक अभिशाप या वरदान नही है। यह मनुष्य के हाथ में आकर शाक्ति प्राप्त करता है। महत्वाकांक्षी एवं साम्राज्यवादी राष्ट्र विज्ञान का दुरूपयोग कर रहे है। व देशप्रेमी व वैज्ञानिक साधनो का मानव हितार्थ प्रयोग करेंगे तो यह निश्चय है कि धरती पर सुख एवं शान्ति का पारावार होगा। जन–जन का मन उल्लास से भरा होगा। विनाश– लीला का समापन होगा। धन का प्रयोग कल्याणकारी कामों में होगा। धरती के कण–कण से निम्न स्वर गुंजित होगें।

समाचार पत्रो की उपयेगिता

या

स्माचार पत्र – समाज के सजग प्रहरी

<u>प्रस्तावना–</u> मानव एक जिज्ञासा प्रधान प्राणी हैं। ज्ञान प्राप्त करने की उसकी लालसा कभी सन्तुष्ट नहीं होती। इसी का परिणम है कि आज मानव ज्ञान की बुलन्दियों की ओर अग्रसर है। आज के युग में ज्ञान, सम्पन्न मानव के लिए समाचार पत्र एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। इसमे नयी – नयी खबरों, घटनाओं, विचारों तथा तथ्यों का उल्लेख होता है। यदि भोजन उदर की ज्वाला को शान्त करते है, तो समाचार–पत्र मास्तिक की भूख का शमन करते हैं। इसके बिना आज का जीवन अधूरा लगता हैं। ज्ञान में अपूर्णता की गंध आती है। जिंदगी भटकी–भटकी सी प्रतीत होती है।

<u>समाचार पत्र का इतिहास</u>:– अगर हम समाचार पत्र के इतिहास पर दृष्टि डाले तो यह बात पता चलती है कि इसका सर्वप्रथम प्रारम्भ इटली के बेनिस नगर मे हुआ। अखबार प्रकाशन में अंग्रेजो की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। 'इण्डिया गजट' नामक अखबार उन्होने ही प्रकाशित कराया। आज तो हमारे देश में समाचार पत्रों की भरमार है। कस्बे, ग्रामों कथा नगरों मे समाचार – पत्र निकाले जा रहे हैं। हिन्दी मे प्रथम अखबार कोलकाता में प्रकाशित हुआ। इसका नाम 'उदत्त मार्तण्ड' था। सम्भवतः विश्व में कोई ऐसा देश नही है। जहाँ दो–चार समाचार पत्र प्रकाशित न होते हो, देश में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं।

<u>उपयोगिता</u>:– समाचार – पत्रों के माध्यम से हमें विश्व की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक दशा की भरपूर जानकारी मिलती है। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ निबन्ध एवं कविताएँ हमारे मनोरंजन के प्रमुख साधन हैं इससे हमारे ज्ञान का क्षितिज भी विस्तृत होता है। समाज में दो नित्य नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। उनकी जानकारी का साधन भी समाचार पत्र हैं। समाज सुधार, विज्ञापन एवं ज्ञानवर्द्धन में समाचार पत्रों की अहम् भूमिका है।

<u>दुरूपयोग से हानियाँ:–</u> समाचार–पत्र शब्द को नई चेतना एवं रोशनी देते हैं। समाचार पत्रों के सम्पादकों के कंधो पर उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यो का गुरूतर बोझ होता है। यदि वे स्वच्छन्द एवं निरंकुश होकर समाचार प्रकाशित करेंगे, तो समाज आतंक, भ्रष्टाचार, अफवाह तथा अश्लीलता का अड्डा बन जाएगा। इससे देश तथा समाज की जो हानि होगी उसकी भरपाई कर पाना बहुत ही दुष्कर है।

यदि समाचार – पत्र के सम्पादक दुष्प्रवृत्ति को सद्प्रवृति बनाने का प्रयास करेगें मानवता विरोधी–कृत्य को आदर्श ठहराएँगे राजनीतिक भ्रष्टाचार को उचित स्वीकारेगे तो देश तथा समाज को कितनी हानि होगी, इसकी कल्पना मात्र से दिल काँप जाता हैं।

<u>उपसंहार</u>:– आजादी के आन्दोलन में समाचार – पत्रों की भूमिका सराहनीय रही है। ये हमे दुनिया के साथ जोड़ते हैं। जन–सामान्य की पीड़ा को व्यक्त करने के सशक्त साधन है। शासन को निरंकुश करने से रोकते हैं। चेतना तथा ज्ञान के लिए नए क्षितिज का निर्माण करते है। रचनात्मक कार्यो को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमारी मानसिक क्षुधा को तृप्त करते है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद तथा धार्मिक उन्माद के प्रति आक्रोश एवं घृणा भाव जाग्रत करते हैं।

राष्ट्रीय त्यौहार (गणतंत्र दिवस)

प्रस्तावनाः– हमारे देश में जिस प्रकार से धार्मिक एवं सामाजिक त्यौहारो का विशेष महत्व है, उसी प्रकार से राष्ट्रीय त्यौहारों का विशेष महत्व है। गणतन्त्र दिवस एवं स्वतन्त्रता दिवस एक राष्ट्रीय त्यौहार है। यह त्यौहार बिना किसी भेद–भाव के साथ मिल जुलकर मनाया जाता है।

गणतन्त्र का अर्थ एवं महत्वः– गणतन्त्र का अर्थ होता है गण+तन्त्र। गण का अर्थ है प्रजा और तन्त्र का अर्थ है व्यवस्था। इस प्रकार गणतन्त्र का पूरा अर्थ होता है – प्रजा द्वारा स्थापित शासन व्यववस्था।

भारतीय इतिहास में 26 जनवरी का दिन विशेष महत्व रखता है। वैसे तो हमारा देश 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजो की दासता से मुक्त हो गया था, किन्तु पूरी आजादी 26 जनवरी 1950 को प्राप्त हुई थी, क्योंकि इस दिन हमारे सारे देश में भारतीय संविधान के कानून लागू किए गए थे और भारत को गणतन्त्र देश घोषित किया गया था।

मनाने का कारण :– गणतन्त्र दिवस हम दो कारणों से मनाते हैं। एक तो उन शहीदो की याद को ताजा करने के लिए जो देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणो की बलि देकर अमर हो गए। और दूसरा गणतन्त्र की खुशी के कारण।

26 जनवरी, 1929 को लाहौर में रावी नदी के तट पर पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अखिल भारतीय काँग्रेस के अधिवेशन में भारतियो ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने की कसम खायी थी। इस कसम का पालन करने के लिए हमारे भारतीय वीरो ने अनेक यातनाएँ सही, न जाने कितने वीर जवानों ने अपने प्राणों की बलि दी। गाँधी जी, नेहरू तिलक एवं गोखले आदि नेताओ ने आजादी की प्राप्ति के लिए जी–जान से कोशिश की। अतः बहुत परिश्रम और आहुतियों के बाद हमारा देश आजाद हो सका।

मनाने का तरीकाः– इस दिन सब विद्यालयो शिक्षण संस्थाओं तथा कार्यालयों आदि मे छुट्टी रहती है। फिर भी लोग यहाँ आते है,। जिससे सब मिल–जुलकर खुशी मना सकें। सभी स्थानो पर राष्ट्रीय–ध्वज फहराया जाता है। और 'राष्ट्रीय गान' गाया जाता है। भारत की राजधानी दिल्ली में गणतन्त्र दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। गणतन्त्र दिवस की परेड और झाँकियाँ देखने योग्य होती है। प्रत्येक प्रदेश की झाँकी दिखायी जाती है। लोकनृत्यो आदि का भी आयोजन होता है। इस अवसर पर सभी नेता, मंत्री तथा विशाल जनसमूह उपस्थित होता है। राष्ट्रपति मंच पर खड़े होकर झण्डे को सलामी देते हैं। लालकिले को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। ये सब देखने में अत्यन्त सुंदर और मन को प्रसन्न करने वाले दृश्य होते हैं। विभिन्न संस्थाओं में ध्वजारोहण के बाद अन्त में मिठाई वितरण, व पुरस्कार आदि वितरित किए जाते है। व कार्यक्रम का समापन किया जाता हैं।

उपसंहारः– इस प्रकार गणतन्त्र दिवस हमें यह याद दिलाता है कि इस दिन संविधान लागू हुआ, गणतन्त्र राज्य घोषित हुआ। यह त्यौहार हमें अमर शहीदों के त्याग एवं बलिदानों की पावन स्मृति कराता है। अतः हमे मातृभूमि की तन–मन–धन से रक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि भारतमाता पर बलि होने के लिए हमेशा तैयार रहे।

प्रार्थना पत्र

1. अपने प्रधानाध्यापक महोदय को शुल्क मुक्ति हेतु एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाध्यपक महोदय,

समर्थ बाल मन्दिर हाई स्कूल

आंनद नगर, लश्कर, ग्वा0

विषय – शुल्क मुक्ति हेतु आवेदन पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा सात 'अ' का छात्र हूँ मेरे पिताजी एक कार्यालय में चपरासी के पद पर कार्यरत है। माताजी की लंबी बीमारी के कारण वे मेरा शुल्क देने में असमर्थ है। मैं हमेशा प्रथम श्रेणी से उतीर्ण हुआ/हुई हूँ। मैं अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहता/चाहती हूँ। इसलिए महोदय से निवेदन है, कि वे मेरा शुल्क माफ करने की कृपा करें।

कृपया मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति प्रदानकर उपकृत करें।

आपका/आपकी आज्ञाकारी छात्र/छात्रा

नाम –

कक्षा – 8वी

धन्यवाद

दिनांक–

अपका नाम महेश जैन है। अपने कक्षाध्यापक को अपनी बीमारी के कारण तीन दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में,

श्रीमान कक्षाध्यापक महोदय,

समर्थ बाल मन्दिर हाई स्कूल

आंनद नगर, लश्कर, ग्वा0

विषयः– अवकाश हेतु आवेदन पत्र

महोदय,

सादर निवेदन है, कि मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं विद्यालय मे तीन दिन तक आने में असमर्थ हूँ। डॉक्टर ने मुझे पूर्ण विश्राम की सलाह दी है।

अतः श्रीमान से निवेदन है कि मुझे तीन दिनों का अवकाश प्रदानकर उपकृत करे।

आपका आज्ञाकारी छात्र

महेश जैन

कक्षा – 8वी

धन्यवाद

दिनांक –

कक्षा सातवी उत्तीर्ण कर लेने पर शाला त्याग प्रमाणपत्र प्राप्त करने हेतु (स्थानान्तरण प्रमाण पत्र) अपने प्रधानाध्यापक को प्रार्थना पत्र लिखो।

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाध्यपक महोदय,
समर्थ बाल मन्दिर हाई स्कूल
आंनद नगर, लश्कर, ग्वा0

विषयः– शाला त्याग प्रमाणपत्र विषयक आवेदन पत्र

महोदय,

सेवा में निवेदन हैं, कि मैने आपके विद्यालय से कक्षा सातवीं उत्तीर्ण कर ली है। मुझे मकान बदलने के कारण दूसरे विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ रहा है। इस हेतु मुझे शाला त्याग प्रमाणपत्र की आवश्यकता है।

कृपया मुझे शाला प्रमाणपत्र देने का कष्ट करें ।

आपका/आपकी आज्ञाकारी छात्र/छात्रा

नाम –

कक्षा – 8वी

धन्यवाद

दिनांक–

4. अपने प्रधानाध्यापक को छात्रवृति देने हेतु प्रार्थना पत्र लिखो।

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाध्यपक महोदय,
समर्थ बाल मन्दिर हाई स्कूल
आंनद नगर, लश्कर, ग्वा0

विषयः– छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है, कि मैं कक्षा 8वी का निर्धन छात्र हूँ। मेरे पिताजी मेरी पढ़ाई का खर्चा वहन करने में असमर्थ हैं। मैं प्रत्येक परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता आया हूँ मैं अपना अध्ययन जारी रखना चाहता हूँ। इसलिए महोदय से निवेदन है कि मुझे छात्रवृत्ति देने का कष्ट करे।

कृपया मुझे छात्रवृति (शाला शुल्क द्रव्य) प्रदान कर अनुग्रहित करें।

आपका/आपकी आज्ञाकारी छात्र/छात्रा

नाम –

कक्षा – 8वी

धन्यवाद

दिनांक–

विलोम शब्द

उपरान्त	पूर्व	राजा	रंक
प्रत्यक्ष	अप्रत्यक्ष	आग	पानी
असाधारण	साधारण	यश	अपयश
मन्द	तीव्र	स्वदेश	विदेश
दयालु	निर्दयी	आकाश	पाताल
विजय	पराजय	आदर	निरादर
अपमान	सम्मान	ज्ञान	अज्ञान
अंधेरा	उजाला	उत्थान	पतन
अमृत	विष	सफल	विफल
अपना	पराया	जड़	चेतन
आदि	अन्त	सदाचार	दुराचार
अवगुण	गुण	कोमल	कठोर
अनुकूल	प्रतिकूल	बुराई	भलाई
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	दानी	कंजूस
न्याय	अन्याय	चतुर	मूर्ख
जीना	मरना	पूत	कपूत
देव	दानव	लाभ	हानि
सुख	दुःख	शुक्ल	कृष्ण
वरदान	अभिशाप	श्वेत	श्याम
धर्म	अधर्म	शुद्ध	अशुद्ध
भूत	भविष्य	संगत	विसंगत
नर	नारी	सुंदर	कुरूप
गुण	दोष	स्थिर	अस्थिर
स्वर्ग	नरक	स्वतन्त्र	परतत्र

सौभाग्य	दुर्भाग्य	माता	पिता
जन्म	मृत्यु	लोक	परलोक
विरोध	सर्मथन	शिक्षित	अशिक्षित
निकट	दूर	परमार्थ	स्वार्थ
संयोग	वियोग	सत्य	असत्य
भारी	हल्का	मुख्य	गौण
योगी	भोगी	सम	विषम
स्वामी	सेवक	लघु	दीर्घ
मित्र	शत्रु	आय	व्यय
शांति	अशांति	रहित	सहित
समर्थ	असर्मथ	भय	निर्भय
सरस	नीरस	कीर्ति	अपकीर्ति
वीर	कायर	पति	पत्नी
आदान	प्रदान	ज्ञात	अज्ञात
स्वाधीन	पराधीन	देश	विदेश
शोक	हर्ष	विख्यात	कुख्यात
आयात	निर्यात	खरा	खोटा
गुरू	शिष्य	सुकर्म	कुकर्म
पंडित	मूर्ख	आलसी	फुर्तीला
प्रेम	घृणा	आज्ञा	अवज्ञा
इच्छा	अनिच्छा	दूषित	स्वच्छ
उन्नति	अवनति	पुरूस्कार	दण्ड
थोड़ा	बहुत	वक्र	सरल
नवीन	प्राचीन	ऊँचा	नीचा
युवा	वृद्ध	इष्ट	अनिष्ट

श्रोगी	निरोगी	आस्तिक	नास्तिक
रक्षक	भक्षक	एक	अनेक
क्रोध	क्षमा	क्रय	विक्रय
ज्येष्ठ	कनिष्ठ	चाहा	अनचाहा
छाया	धूप	कोप	कृपा
नीरस	सरस	विधवा	सधवा
विश्वास	अविश्वास	सृष्टि	प्रलय
सम्पदा	विपदा	मौखिक	लिखित
मंगल	अमंगल	मिलन	विच्छेद
उपस्थिति	अनुपस्थिति		

पर्यायवाची शब्द

सूर्य	–	भानु, सूरज, रवि	चन्द्र	–	शशि, चन्द्रमा, राकेश
आसमान	–	आकाश, गगन, नभ	वृक्ष	–	पेड़, पादप, विटप
भूमि	–	पृथ्वी, भू, वसुन्धरा	सागर	–	समुद्र, सिन्धु, जलधि
सरोवर	–	तालाब, सर, जलाशय	जल	–	नीर, वारि, पानी
अग्नि	–	आग, पावक, अनल	अमृत	–	सुधा, पीयुष, सोम
कमल	–	सरोज, जलज, पंकज	देवता	–	अमर, सुर, देव
पवन	–	वायु, हवा, समीर	पक्षी	–	विहग, खग, परवेरू
इन्द्र	–	देवराज, सुरेश, सुरपति	बिजली	–	विद्युत, चपला, दामिनी
संसार	–	दुनिया, जगत, विश्व	गंगा	–	भागीरथी, देवनदी, मन्दाकिनी
पर्वत	–	गिरि, शैल, पहाड़	आँख	–	नेत्र, लोचन, चक्षु
फूल	–	पुष्प, कुसुम, सुमन	स्त्री	–	महिला, नारी, औरत
सोना	–	स्वर्ण, कंचन, कनक	मार्ग	–	रास्ता, पथ, मग
नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी	ईश्वर	–	परमात्मा, भगवान, परमेश्वर
असुर	–	राक्षस, निशाचर, दान	राजा	–	भूपति, नृप, नरेश

दिन	–	दिवस, वासर, वार	रात	–	रात्रि, रजनी, निशा
वन	–	जंगल, कानन, विपिन	पुत्र	–	पूत, बेटा, तनय
पुत्री	–	सुता, बेटी, तनया	हाथी	–	गज, हस्ती, मतंग
सर्प	–	अहि, साँप, नाग	गणेश	–	गजानन, एकदन्त, गणनायक
शिव	–	शंकर, महादेव, भूतनाथ	विष्णु	–	चर्तुभज, केशव, जनार्दन

वाक्यांश के एक शब्द

जिसकी उपमा न हो	–	अनुपम	जो परिचित न हो	–	अपरिचित
जिसके समान कोई दूसरा न हो	–	अद्वितीय	जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो	–	अजातशत्रु
जो तृप्त न हो	–	अतृप्त	जिसका आदि न हो	–	अनादि
जिसका अंत न हो	–	अनंत	जिसका ईश्वर में विश्वास हो	–	आस्तिक
जिसका ईश्वर में विश्वास न हो	–	नास्तिक	जो पहले पैदा हुआ हो	–	अग्रज
जो बाद में पैदा हुआ हो	–	अनुज	जिसे अक्षरों का ज्ञान हो	–	साक्षर
जिसे अक्षरों का ज्ञान न हो	–	निरक्षर	जो कभी न मर सके	–	अमर
जो कभी बूढ़ा न हो	–	अजर	जो नष्ट न हो सके	–	अनश्वर
जो नष्ट हो सके	–	नश्वर	जो अचानक आ गया हो	–	अतिथि
जिसने अपना ऋण चुका दिया हो	–	उऋण	जो भविष्य में आने वाला हो	–	आगामी
जो किए हुए उपकार को न माने	–	कृतध्न	जो किए हुए उपकार को माने	–	कृतज्ञ
जिसका संबध इस लोक से हो	–	लौकिक	जिसका संबध उस लोक से हो	–	अलौकिक
जिसका आधार हो।	–	साधार	जिसका आधार न हो।	–	निराधार
जो गुण सम्पन्न हो	–	सगुण	जो गुण सम्पन्न न हो	–	निर्गुण
जो कम खर्च करता हो	–	मितव्ययी	जो अधिक खर्च करता हो	–	अपव्ययी
जो कम बोलता हो	–	मितभाषी	जो अधिक बोलता हो	–	वाचाल
बाप दादा से मिलने वाला धन	–	पैतृक	जो पवित्र काम के लिए अपना प्राण दे चुका हो।	–	शहीद
जिसके हाथ में चक्र हो	–	चक्रपाणि	जो राष्ट्र से सम्बन्धित हो	–	राष्ट्रीय

जिसके हाथ में वीणा हों	–	वीणापाणि	जिसकी चार भुजाएँ हों	–	चतुर्भुज
जिसके दस मुख हों	–	दशानन	जिसके पाँच मुख हों	–	पंचानन
छः मुखों वाला	–	षट्मुख	जिसके मस्तक पर चन्द्र हो	–	चन्दशेखर
जिसके पार देखा जा सके	–	पारदर्शक	जिसके पार न देखा जा सके	–	अपारदर्शक
जानने की इच्छा रखने वाला	–	जिज्ञासु	जिसे कहा न जा सके	–	अकथनीय
जिसके हृदय मे ममता नही	–	निर्मम	जो दया से रहित हो	–	निर्दय
जो पृथ्वी को धारण करता है।	–	भूधर	जिसके चार पैर हैं	–	चौपाया
दो बार जन्म लेने वाला	–	द्विज	जिसका पति मर गया हो	–	विधवा
जिसका पति जीवित हो	–	सधवा	जल मे जन्म लेने वाला	–	जलज
अण्डें में जन्म लेने वाला	–	अण्डज	पसीना से जन्म लेने वाला	–	स्वेदज
पृथ्वी से सम्बन्ध रखने	–	पार्थिव	जिसे टाला न जा सके	–	अनिवार्य
जो दूर की सोचे	–	दूरदर्शी	जो दूर की न सोचे	–	अदूरदर्शी
जो बिना वेतन के काम करे	–	अवैतनिक	आलोचना करने वाला	–	आलोचक
जिसकी बुद्धि तीव्र हो	–	कुशाग्रबुद्धि	जो हाथ से लिखा हो	–	हस्तलिखित
जो शब्दो द्वारा व्यक्त न किया जा सके–		अनिर्वचनीय	जो पहले हो चुका	–	भूतपूर्व
जो पहले न हुआ हो	–	अभूतपूर्व	तीनों काल को देखने वाला	–	त्रिकालदर्शी
जिसकी पत्नी मर गई हो	–	विधुर	मांस खाने वाला	–	मांसाहरी
मांस न खाने वाला	–	शाकाहारी	जो किसी के पक्ष में न हो	–	निष्पक्ष
शिव का उपासक	–	शैव	शक्ति का उपासक	–	शाक्त
विष्णु का उपासक	–	वैष्णव	जहाँ पहुँचना सम्भव न हो	–	अगम्य
जहाँ पहुँचना सरल हो	–	सुगम	महान बनने वाला	–	महत्वाकांक्षी
जिसे समझना सरल	–	सुबोध	जिसे समझना कठिन हो	–	दुर्बोध
जो कुछ भी न जानता हो	–	अज्ञ	जो सब कुछ जानता हो	–	सर्वज्ञ
जो थोड़ सा जानता हो	–	अल्पज्ञ	जो अधिक जानता हो	–	बहुज्ञ
जो नया आया हो	–	नवागन्तुक	जो अच्छे कुल मे पैदा हुआ हो–		कुलीन

जो सबमें व्याप्त हो	–	सर्वव्यापक	जो किसी ओर से हो	–	प्रतिनिधि
युद्ध में स्थिर रहने वाला	–	युधिष्ठिर	विदेश में रहने वाला	–	प्रवासी
जो आँखों के सामने हो	–	प्रत्यक्ष	जो आँखों के सामने हो	–	अप्रत्यक्ष
प्रतिकूल पक्ष का	–	विपक्ष	अनुकूल पक्ष का	–	परोक्ष
सहन करना जिसका स्वभाव हो–		सहनशील	जो मुक्त होना चाहे	–	मुमुक्षु
जो मृत्यु के निकट हो	–	मुमुर्षु	सत्य के लिए आग्रह करने वाला–		सत्याग्रही
जो हमेशा रहे	–	शाश्वत्			

मुहावरे

परिभाषा– जब कोई वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है उसे मुहावरा कहते हैं।

मुहावरे व उनके अर्थ

मुहर लगा देना	–	प्रभाव पड़ना	मौत से लड़ना	–	मुसीबतें झेलना
सिर माथे चढ़ना	–	स्वीकार करना	काया पलट होना	–	परिर्वतन होना
जड़ हिलाना	–	कमजोर कर देना	चैन की वंशी बजाना	–	मौज लेना
हामी भरना	–	स्वीकार करना	फूले न समाना	–	अधिक प्रसन्न होना
कहा–सुनी होना	–	झगड़ा होना	जी–जाना से जुट जाना	–	अधिक प्रसन्न होना
तुल जाना	–	निश्चय कर लेना	जम जाना	–	डटना
आकाश चूमना	–	बहुत ऊँचा उठना	लट्टू होना	–	मोहित होना
आँखो से न गुजरना	–	दिखाई न देना	हृदय में हलचल होना	–	उथल–पुथल होना
हृदय पर साँप लोटना	–	ईर्ष्या करना	आँखे गड़ना	–	ध्यान से देखना
ईद का चाँद होना	–	बहुत दिनो बाद दिखना	छक्के छुड़ाना	–	हराना
अन्धे की लकड़ी	–	एकमात्र सहारा	मियाँ मिठ्ठू बनना–		स्वंय अपनी प्रंशसा करना
कमर कसना	–	तैयार होना	नौ–दो ग्यारह होना	–	भाग जाना
पहाड़ टूट जाना	–	विपत्ति आ जाना	पत्थर की लकीर	–	पक्की बात
रंग में भंग पड़ना	–	विघ्न पड़ना	भैंस के आगे बीन बजाना	–	मूर्ख के आगें ज्ञान की

बाते करना

एक आँख से देखना – सबको समान दृष्टि से देखना

ईंट से ईट बाजाना – सर्वनाश कर देना

गले का हार होना – अत्यन्त प्रिय होना

अपना उल्लू सीधा करना– स्वार्थ सिद्ध करना

जहर का घूँट पीना – क्रोध सहन करना

आँखो से उतरना – सम्मान खोना

आँखो में धूल झोंकना – धोखा देना

गले का हार होना – अत्यन्त प्रिय होना

चार चाँद लगाना – यश फैलाना

गाल बजाना – बकवास करना

भीगी बिल्ली बनना – सामना करने से डरना

आग में कूदना – अपने आप को जोखिम में डालना

हामी भरना – स्वीकार करना

हाथ लगना – अकस्मात प्राप्त होना

प्राणों की बाजी लगाना – जान जोखिम में डालना

अक्ल पर पत्थर पड़ना – मूर्खता भरे काम करना

चुल्लू भर पानी में डूबना – शर्मिन्दा होना

लोहे के चने चबाना – मुश्किल कार्य करना

थोथा चना बाजे धना – केवल बाते बनाना

मुँह मोड़ लेना – उदासीन हो जाना

दीपक बुझ जाना – वंश का नाश होना

हाथ पाँव फूलना – अत्यधिक भयभीत होना

घी के दिए जलाना – खुशी मनाना

डींग मारना – बढ़चढ़कर बातें करना

थूककर चाटना – अपनी बातो से पलटना

लोकोक्ति (कहावतें)

परिभाषाः– लोकाक्ति का अर्थ है संसार मे प्रचलित उक्ति। अपने कथनों को प्रभावशाली बनाने के लिए इनका स्वतन्त्र वाक्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

अकेला चना भाड़ नही फोड़ सकता – अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता

आँख के अन्धे नाम नैन सुख – नाम के विपरीत गुण होना

आम के आम, गुठलियो के दाम – दुहरा लाभ होना

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे – दोषी द्वारा निर्दोष पर दोषारोपण करना।

ऊँची दुकान फीके पकवान – केवल बाहरी दिखावा असलियत कुछ और होना।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया – अधिक मेहनत, फल कम

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए – अत्यधिक कंजूसी करना

अपनी –अपनी ढपली अपना अपना राग – एकमत न होना

आँख फूटी पीर गयी – सम्बब्ध न रहने पर चाहे जो हो

पाँचो अंगुलियाँ घी में होना – पूरा लाभ उठाना

नेकी का फल बदी – भलाई करने वाले की बुराई होना

इधर कुआँ उधर खाई – दो विपत्तियो में फंसना

ऊँट के मुँह में जीरा – कोई वस्तु आवश्यकता से कम होना

छोटा मुँह बड़ी बात – बहुत बढ़-चढ़ कर बातें करना

समास

समास :– समास का सामान्य अर्थ है– संक्षेप दो या दो से अधिक ऐसे शब्दों के मेल को समास कहते हैं। जिनमें विभक्तियो का लोप हो जाता है।

समास के भेदः– समास के छः प्रकार के होते है।

1. <u>अव्ययीभाव समास</u> जिस समास में एक पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

   उदा0 प्रति + दिन – प्रतिदिन

   यथा + शक्ति – यथाशक्ति

2. <u>तत्पुरुष समास</u> जिस समास में दोनो पद संज्ञा हो किन्तु दूसरा पद प्रधान होता है। उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

   उदा0 राजा का मुकुट – राजमुकुट

   वन में वास – वनवास

3. <u>कर्मधारय समास</u> जिस समास में पहला पद संज्ञा व दूसरा पद विशेषण होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

   उदा0 पीला है जो अम्बर – पीताम्बर

   धन है जो श्याम – घनश्याम

4. <u>द्विगु समास</u> जिस समास में पहला पद संख्यावाची हो उसे द्विगु समास कहते है।

   उदा0 त्रि + भुवन – त्रिभुवन

   पंच + वटी – पंचवटी

5. <u>द्वन्द्व समास</u> जिस समास में दोनो पद बराबर या प्रधान हो उसे द्वन्द्व समास कहते है।

उदा0 माता और पिता – माता–पिता

दिन और रात – दिन–रात

6. <u>बहुब्रीहि समास</u> जिस समास में अन्य पद प्रधान होता है। उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

उदा0 एक है जिसका दन्त – एकदंत – गणेश

दस है जिसके आनन – दशानन – रावण

<u>संधि</u>

परिभाषाः– दो वर्णो के मेल को संधि कहते हैं।

जैसे– रमेश – रमा + ईश

भदेः– संधि तीन प्रकार की होती है।

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग सन्धि

1. **<u>स्वर संधि</u>** दो स्वरों के आपस में मिलने से जो परिवर्तन होता है। उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

स्वर संधि 5 प्रकार की होती है।

(1) दीर्घ स्वर सन्धिः– जहाँ दो समान स्वर आपस में मिले, तो वहाँ दीर्घ स्वर संधि कहते हैं।

उदा0 विद्या + आलय – विद्यालय

गिरि + इन्द्र – गिरीन्द्र

भानु + उदय – भानूदय

पितृ + ऋण – पितृण

(2) गुण स्वर संधि– यदि अ या आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ आए, तो दोनो के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है।

उदा0 हित + उपदेश – हितोपदेश

सुर + इन्द्र – सुरेन्द्र

महा + ऋषि – महर्षि

(3) यण सन्धि– यदि हस्व या दीर्घ ई, उ, ऋ या ऌ के सामने कोई असमान स्वर आए तो इ का य्, उ का व्, ऋ का र् और ऌ का ल् हो जाता है।

उदा0 यदि + अपि – यद्यपि

सु + आगतम् – स्वागतम्

प्रति + एक – प्रत्येक

मातृ + आज्ञा – मात्राज्ञा

(4) वृद्धि सन्धि – यदि अ या आ के सामने ए, ऐ या ओ, औ हो जाता है। इसी मेल को वृद्धि सन्धि कहते है।

उदा0 तथा + एव – तथैव

महा + औषध – महौषध

(5) अयादि सन्धि – यदि ए, ऐ तथा ओ, औ के सामने कोई स्वर आए तो ए, ऐ और ओ, औ का क्रमशः अय्, आय् अव व आव हो जाता है।

उदा0 नै + अक – नायक

पौ + अक – पावक

पो + इत्र – पवित्र

2. व्यंजन सन्धि – स्वर व व्यंजन के मिलने पर जब उनका रूप परिवितर्त हो जाताा है। तो उसे व्यंजन संन्धि कहतें हैं।

उदा0 दिक् + गज – दिग्गज

उत् + हार – उद्धार

जगत् + ईश – जगदीश

3. विसर्ग सन्धि – विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है। उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

उदा0 निः + चल – निश्चल मनः + हर – मनोहर

नि + धन – निर्धन निः + कपट – निष्कपट

निः + संदेह – निस्सेदंह